निष्कर्ष

लोक परंपरा की दृष्टि से मध्य प्रदेश का मालवा अंचल अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। मालवा, राजस्थान और गुजरात की सीमाओं को छूता है। स्वाभाविक है कि इन प्रदेशों की संस्कृति का प्रभाव मालवा के पर्व, त्योहारों, अवसर, अनुष्ठानों तथा कला परम्पराओं पर स्पष्ट रूप से हुआ है, और इसमें मालवी संस्कृति एक अलग रूप में दृष्टिगोचर होती है। मालवा का अपना लोकनाट्य माच, गीत, कथा वार्ताएँ, पहेलियॉं, कहावतें आदि मध्यप्रदेश के कई क्षेत्रों में प्रचलित हैं, इसकी शब्द संम्पदा अत्यंत समृद्ध है।

मालवा की लोक संस्कृति में लोक-साहित्य, लोक-नृत्य, लोक-संगीत, लोक-गीत, लोक-नाटक, लोक-चित्रकारी आदि का विशेष स्थान है। उज्जैन मालवी बोली और मालवी लोक-संस्कृति का केन्द्र-स्थल है। शहरों और गाँवों का भेद जैसे यहाँ तिरोहित है। यहाँ के मंदिरों, क्षिप्रा-तट और विभिन्न मोहल्लों में ऋतुपर्वों, धार्मिक और सामाजिक अवसरों पर आयोजित मेलों-त्यौहारों और पारम्परिक लोकोत्सवों में मालव जनपद के अंतर्मन की झलक दिखायी देती है। उत्सवधर्मी लोकमानस की विभिन्न प्रवृत्तियाँ मालवी लोक-कलाओं को निरंतर विकसित और समृद्ध बनाती रही है। उज्जैन लोक-कलाकारों का केन्द्र-स्थल रहा है।

मालवा अंचल की लोक परम्पराओं में लोकनाट्य 'माच' का विशिष्ट स्थान है। उज्जयिनी को ही लोक नाट्य माच की उद्गम भूमि होने का गौरव प्राप्त हैं। लगभग 200 से 250 वर्ष पूर्व 'माच' की शुरुआत हुई थी। जो निरंतर बढ़ते शहरीकरण और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की चकाचोंध भरी उपस्थिति के बावजूद आज अपना अस्तित्व को बचाने में यदाकदा कुछ माच के अखाड़े संघर्ष कर रहें हैं। माच के उद्गम में मालवांचल की अनेक लोकरजंन कलाओं का योगदान रहा हैं। जिसमें प्रमुख हैं गरबी गीत, तुर्रा-कलगी, ढारा-ढारी के खेल, नकल, स्वॉग, गम्मत, समीपवर्ती राजस्थान से अलग लोकनाट्य ख्याल हजरात विधा आदि। मालवा के लोकनाट्यों का अध्ययन और विश्लेषण से यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट होती है की मालवा लोकनाट्य माच में मालवा की लोकपरम्पराओं से माच गुरुओं ने कई तत्वों को माच में शामिल किया।

माच की जो वर्तमान प्रस्तुति शैली है उनको देखने के बाद तथा लोक परम्पराओं को समझने के बाद यह ज्ञात हुआ की कई पहलुओं पर बदलाव हुए है जैसे- कथानक के स्तर पर आज समकालीन माच

की अधिकांश प्रस्तुतियों के कथानक समसामयिक घटनाओं पर आधारित होने लगे हैं तथा होली, सावन, गणगौर, संजा पर्व जैसे- ऋतुपर्वों पर आयोजित मालवी लोक-नृत्यों की एकल और सामूहिक नृत्य-गतियाँ, ढाराढारी के खेल, गीत-नृत पर्व 'गर्बा' गम्मत एवं तुर्रा-कलगी, नकल, स्वॉग जैसे लोक परम्पराओं का भी अंश तथा लोक तत्वों का असर माच में दिखता है।

इस के अलावा माच का कथानक सामाजिक समस्याओं (कुष्ठ रोग,टीवी, रोग) को देखते हुए भी बुना जा रहा है। समय सीमा का बदलाव माच पर देखा जा सकता है किस तरह से माच के खेल रात्रि के प्रथम पहर से अंतिम पहर तक बिना किसी बाधा के सम्पन्न होते थे। लेकिन अब मात्र माच के खेल दो या तीन घंटे में ही समाप्त हो जाते हैं। अभिनय के स्तर पर माच के खेलों में आधुनिक नाटकों की छवि दिखाई देती है। इसके अलावा भी माच की प्रस्तुति शैली में कई परिवर्तनोंको देखा जा सकता है। मंच निर्माण की जो प्रक्रिया माच के आदि गुरुओं के समय हुआ करती थी। वर्तमान में माच का मंच उस प्रक्रिया से नही बांधा जाता है।

अब माच के अधिकांश खेल नाट्यग्रह में ही सम्पन्न होते हैं। माच के खेलों में महिलाओं की भागीदारी को देखा जा सकता है। माच के खेलों में एक और खास बदलाव पात्रों की वेश-भूषा को लेकर हुआ जो शायद आधुनिकता के चलते ही सम्पन्न हुआ है। माच की पहचान उसकी गायकी है लेकिन समय के अनुसार कई परिवतनों को देखा जा सकता है। इसका एक कारण यह भी है कि वर्तमान में वह साज़िंदे नहीं रहे जो पहले माच के मंच पर साज दिया करते थे। और माच के साजो समान में भी कई पारिवर्तन हुए हैं जैसे सारंगी के स्थान पर हारमोनियम, ढोलक के स्थान पर तबले आदि और माच में भविष्य में भी बदलाव की संभावनाएं हैं।

माच के आदि प्रवर्तक गुरुओं ने निश्चित रूप से मालवा की पारम्परिक कलारूपों को बहुत करीब से जाना और उनको समझा होगा, तभी आदि प्रवर्तक गुरुओं ने माच के खेओं के निर्माण में मालवा की कई लोक परम्पराओं का प्रयोग किया होगा, मालवा की लोकपरम्पराओं और माच के अध्ययन विश्लेषण से यह बात स्पष्ट होती है की माच के खेलों में मालवा के कई लोकपरम्परा को देखा जा सकता है। प्रस्तुत विषय के आधार पर और शोध के बाद यह कहा जा सकता है कि - लोक प्रतिभाओं के सहयोग से जनमानस की श्रृंगारिक और धार्मिक-पिपासा को शांत करने के लिए मालवा में अनेक प्रवृत्तियां जैसे ढारा-ढारी के खेल, गरबा-उत्सव से संगीत, तुर्रा कलंगी से काव्य-गायन और स्वांग-नक़ल प्रदर्शनों से अभिनय, हास-परिहास, चुटीले व्यंग एवं जनमनोरंजन के तत्त्व जुटाकर माचकारों ने इस नयी रंगशैली को

पनपाया और यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा की माच के खेलों में मालवा का लोक जीवन प्रतिबिम्बित है।

माच में समय के अनुसार कई परिवर्तन हुए जो जरूरी भी है। परिवर्तन होना लोक क नियम है और माच लोक नाट्य इस परिवर्तनशील नाट्य परम्परा का अग्रणी लोक नाट्य है। अंततः कहा जाये तो मालवा अंचल की सम्पूर्ण लोक परम्पराओं का असर माच में दिखाई देता है और मालवा के अन्य लोक नाट्यों का अंश भी माच में समाहित है परन्तु इन सभी मिश्रण के बाद माच की अपनी एक पहचान है जी मिश्रित होते हुए भी अनुठी है।